वास्तविकता यह है कि कॉम्ट की रचनाओं और उनके चिन्तन में एक असाधारण प्रतिभा स्पष्ट होती है। अनेक बाधाओं का सामना करते हुए भी कॉम्ट अपने विचारों पर अटल रहे तथा कठिन परिश्रम से समाजशास्त्र जैसे नये विषय को विज्ञान का रूप देने का प्रयत्न करते रहे। उनकी रचना-शैली, असाधारण स्मरण शक्ति तथा परिपक्व विचारों के कारण आलोचकों की तुलना में उनके प्रशंसकों की संख्या काफी अधिक थी। जिन लोगों ने भी कॉम्ट की रचनाओं का सावधानी से अध्ययन किया, वे धीरे-धीरे उनके प्रशंसक बनते गये। सन् 1857 में समाजशास्त्र के जनक कॉम्ट कैंसर की बीमारी से ग्रस्त हो गये तथा 5 सितम्बर, 1857 को कॉम्ट की मृत्यु हो गयी। कॉम्ट की मृत्यु के बाद भी उनके विचारों ने उन्हें अमर कर दिया। उनके चिन्तन की व्यापकता पर प्रकाश डालते हुए **बार्न्स** (Barnes) ने लिखा है, "सामाजिक सिद्धान्तों अथवा सांस्कृतिक इतिहास के क्षेत्र में ऐसी कम ही समस्याएँ हैं जिन पर कॉम्ट ने विचार न किया हो।"[1] **रेमन्ड एरों** (Ramond Aron) ने समाजशास्त्र के लिए कॉम्ट के योगदान को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि आगस्त कॉम्ट को मानवीय और सामाजिक एकता को स्थापित करने वाला प्रथम समाजशास्त्री कहा जा सकता है।[2]

कॉम्ट की रचनाएँ (Works of Comte)

अपने संघर्षपूर्ण बौद्धिक जीवन में कॉम्ट ने अनेक मौलिक ग्रन्थों की रचना की। इन्हीं रचनाओं के द्वारा उन्होंने समाजशास्त्र को न केवल एक स्वतन्त्र विज्ञान के रूप में प्रतिस्थापित किया बल्कि सामाजिक चिन्तन को भी एक नयी दिशा दी। कॉम्ट की रचनाओं में से निम्नांकित रचनाएँ अधिक महत्वपूर्ण हैं :

(1) A Plan of the Scientific Operations Ncessary for Reorganization of Society—सन् 1822 में प्रकाशित होने वाली कॉम्ट की यह पहली रचना है। इस पुस्तक में कॉम्ट ने सामाजिक पुनर्गठन के लिए वैज्ञानिक योजनाएँ प्रस्तुत करने के साथ ही उन्हें व्यावहारिक रूप देने के लिए महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये। पुस्तक की उपयोगिता को देखते हुए सेन्ट साइमन जैसे प्रमुख विचारक ने इसकी भूमिका लिखने का दायित्व लिया। इस पुस्तक के प्रकाशन के बाद कॉम्ट यह महसूस करने लगे कि सामाजिक प्रगति के लिए सामाजिक पुनर्निर्माण की योजना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि इसके लिए एक ऐसी सामाजिक नीति भी आवश्यक है जो अवलोकन और परीक्षण पर आधारित हो। इसी आवश्यकता को पूरा करने के लिए कॉम्ट ने अपने दूसरे ग्रन्थ की रचना की।

(2) The Course of Positive Philosophy—अनेक वर्षों के कठिन परिश्रम के बाद कॉम्ट की इस रचना का प्रकाशन सन् 1830 से 1842 के बीच छः खण्डों में हुआ। इस पुस्तक में कॉम्ट ने प्रत्यक्षवाद के रूप में समाजशास्त्र के लिए एक नयी पद्धति को विकसित किया। इसका उद्देश्य सामाजिक अध्ययन को अधिक वैज्ञानिक बनाना था। इसी पुस्तक में उन्होंने चिन्तन के तीन स्तरों का विस्तार से उल्लेख करने के साथ विज्ञानों का इस तरह वर्गीकरण किया जिससे समाजशास्त्र की आवश्यकता तथा उसके महत्व को समझा जा सके। यह पुस्तक मुख्य रूप से समाजशास्त्र के सैद्धान्तिक आधारों की विवेचना करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इसी कारण इसे कॉम्ट की रचनाओं में सबसे अधिक उपयोगी और महत्वपूर्ण समझा जाता है।

(3) System of Positive Polity—कॉम्ट द्वारा लिखी गयी यह पुस्तक सन् 1851 से 1854 के बीच चार खण्डों में प्रकाशित हुई। कुछ विद्वान यद्यपि इस पुस्तक को कॉम्ट के परिपक्व विचारों का आधार मानते हैं लेकिन इसी पुस्तक के कारण कॉम्ट के विचारों की वैज्ञानिकता में सन्देह भी किया जाने लगा। इसका कारण यह है कि कॉम्ट ने इस पुस्तक में जो विचार प्रस्तुत किये, उनके द्वारा सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए वैज्ञानिक आधारों की अपेक्षा आध्यात्मिक और नैतिक आदर्शों को कॉम्ट ने अधिक महत्वपूर्ण मान लिया। इसकी आलोचना करते हुए उनके एक प्रमुख अनुयायी **जॉन स्टुअर्ट मिल** ने लिखा है कि इस पुस्तक में कॉम्ट ने अपने वैज्ञानिक चिन्तन की स्वयं ही निर्ममता से हत्या कर दी। ऐसा प्रतीत होता है कि अपने कष्टप्रद पारिवारिक जीवन के बाद कॉम्ट जब श्रीमती डी वॉक्स के सम्पर्क में आये, तब उन्होंने मानवता के धर्म को सामाजिक पुनर्निर्माण का मुख्य आधार मानना आरम्भ कर दिया। इसके बाद भी यह

1 "There are few problems in social theory of cultural history upon which he did not touch."—H. E. Barnes, *An Introduction to the History of Sociology*, p. 84.
2 Ramond Aron, *Main Currents in Sociological Thought*, p. 53.

Scanned with CamScanner

पुस्तक इस दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है कि इसमें कॉम्ट ने अपने सैद्धान्तिक विचारों को व्यावहारिक रूप देने का प्रयत्न किया है।

(4) **Catechism of Positivism**—यह कॉम्ट की अन्तिम रचना मानी जाती है जिसका प्रकाशन सन् 1852 में हुआ। इस पुस्तक में कॉम्ट ने एक ओर यूरोप के समाज में पायी जाने वाली गतिशीलता का विश्लेषण करते हुए जनतन्त्र का समर्थन किया, वहीं दूसरी ओर, उन्होंने प्रेस और वैयक्तिक स्वतन्त्रता को सामाजिक प्रगति के लिए आवश्यक बताया।

इन विभिन्न रचनाओं में कॉम्ट ने जिन प्रमुख विचारों तथा सिद्धान्तों को स्पष्ट किया, अग्रांकित विवेचना में हम उन्हीं में से कुछ प्रमुख विचारों और सिद्धान्तों के विभिन्न पक्षों को स्पष्ट करेंगे।

समाजशास्त्र को कॉम्ट की देन
(CONTRIBUTION OF COMTE TO SOCIOLOGY)

ज्ञान के क्षेत्र में प्रत्येक विचारक का अपना एक विशेष दृष्टिकोण होता है तथा इसी दृष्टिकोण के आधार पर सदैव से ज्ञान की नयी-नयी शाखाओं का विकास होता रहा है। यह सच है कि समाजशास्त्र को एक स्वतन्त्र विज्ञान के रूप में विकसित करने के लिए कॉम्ट ने अनेक सिद्धान्तों और विचारों का प्रतिपादन किया लेकिन उनके अनेक विचार विवाद का विषय बने रहे। समाजशास्त्र के लिए कॉम्ट ने जो योगदान किया, उसका मूल्यांकन इस दृष्टिकोण से करना उचित नहीं है कि वे कितने अधिक वैज्ञानिक हैं बल्कि यह मूल्यांकन इस दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए कि समाजशास्त्र की स्थापना के प्रारम्भिक स्तर पर कॉम्ट के प्रयास किस सीमा तक सार्थक सिद्ध हुए। समाजशास्त्र को कॉम्ट की सामान्य देन को उनके निम्नांकित विचारों तथा सिद्धान्तों की सहायता से समझा जा सकता है :

(1) **समाजशास्त्र के जनक** (Father of Sociology)—कॉम्ट वह पहले विद्वान थे जिन्होंने सन् 1838 में सामाजिक व्यवस्था तथा प्रगति का वैज्ञानिक अध्ययन करने वाले विज्ञान का नाम 'समाजशास्त्र' (Sociology) रखा। कॉम्ट से पहले बहुत-से विद्वानों ने सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों की व्याख्या की थी लेकिन सभी व्याख्याएँ दर्शन, राजनीतिशास्त्र तथा किसी-न-किसी रूप में अर्थशास्त्र से सम्बन्धित थीं। कॉम्ट से पहले किसी भी दूसरे विद्वान ने समाजशास्त्र जैसे एक पृथक् सामाजिक विज्ञान की आवश्यकता महसूस नहीं की। अपनी इसी सूझ-बूझ के कारण आज भी कॉम्ट को समाजशास्त्र के जनक के रूप में स्वीकार किया जाता है।

(2) **चिन्तन के तीन स्तरों का नियम** (Law of Three Stages)—कॉम्ट से पहले विकासवाद के आधार पर अनेक विद्वानों ने सामाजिक घटनाओं की विवेचना की थी। कॉम्ट का स्वयं यह विश्वास था कि ऐतिहासिक पद्धति की सहायता से ही सामाजिक घटनाओं का समुचित विश्लेषण किया जा सकता है। इस आधार पर उन्होंने 'समाजशास्त्र' शब्द के विधिवत् उपयोग से पहले ही 24 वर्ष की अल्पायु में 'चिन्तन के तीर स्तरों का नियम' प्रतिपादित किया। इस नियम के द्वारा कॉम्ट ने यह स्पष्ट किया कि चिन्तन की प्रक्रिया का विकास अनेक स्तरों से गुजर कर होता है। इसका पहला स्तर धार्मिक है, दूसरा तात्विक और तीसरा वैज्ञानिक। कॉम्ट ने तीन स्तरों के नियम को इसलिए भी बहुत महत्व दिया कि सामाजिक विकास का अध्ययन मानव के बौद्धिक विकास की अवस्थाओं या इन तीन स्तरों के आधार पर ही किया जा सकता है।

(3) **प्रत्यक्षवाद की स्थापना** (Establishment of Positivism)—कॉम्ट का यह दृढ़ विश्वास था कि जिस तरह वैज्ञानिक पद्धति की सहायता से प्राकृतिक विज्ञानों का तेजी से विकास हुआ, उसी तरह समाजशास्त्र को भी वैज्ञानिक रूप तभी दिया जा सकता है जब एक वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा सामाजिक नियमों की खोज की जाय। समाजशास्त्र में इस वैज्ञानिक पद्धति को अवलोकन, प्रयोग और वर्गीकरण की सहायता से ही विकसित किया जा सकता है। अध्ययन की इसी पद्धति को कॉम्ट ने 'प्रत्यक्षवाद' का नाम दिया। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि सामाजिक अध्ययनों के लिए प्रत्यक्षवाद के रूप में कॉम्ट की यह एक ऐसी देन है जिसमें आज निरन्तर प्रगति होती जा रही है।

(4) **विज्ञानों का संस्तरण** (Hierarchy of Sciences)—कॉम्ट से पहले सेन्ट साइमन ने विभिन्न प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञानों का एक वर्गीकरण करके उनके बीच पायी जाने वाली समानताओं और भिन्नताओं पर प्रकाश डाला था। विभिन्न विज्ञानों में समाजशास्त्र की स्थिति को स्पष्ट करने के लिए कॉम्ट ने विज्ञानों के संस्तरण को एक नये रूप में प्रस्तुत किया। इस संस्तरण में उन्होंने गणितशास्त्र को सबसे

Scanned with CamScanner

आधारभूत और स्वतन्त्र विज्ञान मानते हुए उसके ऊपर क्रमशः खगोलशास्त्र, भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र तथा समाजशास्त्र को स्थान दिया। इस संस्तरण के द्वारा कॉम्ट ने यह स्पष्ट किया कि विज्ञानों के संस्तरण में जिस विज्ञान का स्थान जितना ऊपर है, वह अपने से पहले के विज्ञानों पर उतना ही अधिक निर्भर होता है। इस आधार पर समाजशास्त्र प्राकृतिक विज्ञानों से पूर्णतया पृथक् नहीं है बल्कि सभी प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञानों के बीच कुछ-न-कुछ निर्भरता अवश्य होती है। इस दृष्टिकोण से भी समाजशास्त्र का कार्य उन नियमों को ज्ञात करना है जो सामाजिक व्यवस्था तथा प्रगति का आधार हैं।

(5) समाज की सावयवी अवधारणा (Organic Concept of Society)—समाजशास्त्र के लिए कॉम्ट की एक महत्वूपर्ण देन उनके द्वारा समाज की सावयवी अवधारणा को एक नये रूप में प्रस्तुत करना है। कॉम्ट से पहले अरस्तू ने सामाजिक संगठन के सन्दर्भ में समाज की जिस सावयवी अवधारणा की व्याख्या की थी, कॉम्ट ने उसे अधिक व्यावहारिक रूप देने का प्रयत्न किया। अरस्तू के विचारों में व्यक्तिवाद का अधिक महत्व था, जबकि कॉम्ट ने सामूहिक चेतना के आधार पर समाज की संरचना को स्पष्ट किया। उन्होंने बताया कि समाज का निर्माण सामाजिक चेतना के आधार पर होता है, इसलिए समाज एक सामूहिक सावयव है। इस अवधारणा के द्वारा कॉम्ट ने यह भी स्वीकार किया कि सामाजिक व्यवस्था का वास्तविक आधार व्यक्तियों में कार्यों के सही वितरण तथा प्रयत्नों के मेल से है। जिस तरह सावयव के विभिन्न अंगों के बीच कार्यों के वितरण और प्रयत्नों के मेल से सावयव सन्तुलित रहता है, उसी तरह सामाजिक व्यवस्था और प्रगति भी तभी सम्भव है जब व्यक्तियों और समूहों के बीच कार्यों का वितरण और प्रयत्नों का मेल सही रूप में हो।

(6) समाजशास्त्र के अध्ययन-क्षेत्र का निर्धारण (Determination of the Scope of Sociology)—अपने से पहले के विचारकों की तरह कॉम्ट ने यह मान लिया था कि प्रत्येक समाज का विकास कुछ समान नियमों के अन्तर्गत होता है। इन नियमों को स्पष्ट करने के लिए कॉम्ट ने समाजशास्त्रीय अध्ययन को दो मुख्य भागों में विभाजित किया—(1) सामाजिक स्थितिकी (social statics) तथा (2) सामाजिक गत्यात्मकता (social dynamics)। सामाजिक स्थितिकी का सम्बन्ध सामाजिक व्यवस्था और प्रगति के उन नियमों की खोज से है जो समाज में व्यवस्था को बनाये रखते हैं। दूसरी ओर, प्रत्येक समाज में कुछ ऐसे भी नियम पाये जाते हैं जो परिवर्तन के रूप और विकास की दिशा को निर्धारित करते हैं। इस दृष्टिकोण से सामाजिक स्थितिकी तथा सामाजिक गत्यात्मकता समाजशास्त्र की दो प्रमुख शाखाएँ हैं तथा इन्हीं से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों का समाजशास्त्र में अध्ययन किया जाना चाहिए।

(7) सामाजिक पुनर्निर्माण की योजना (Plan of Social Reconstruction)—कॉम्ट प्रत्यक्षवादी अथवा वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा सामाजिक व्यवस्था तथा सामाजिक प्रगति के अध्ययन पर बल देना चाहते थे। इसी प्रयत्न में उन्होंने सामाजिक पुनर्निर्माण की एक ऐसी योजना प्रस्तुत की जिसके द्वारा तत्कालीन पूँजीवादी व्यवस्था की बुराइयों को दूर किया जा सके। इसके लिए उन्होंने कान्त, तूर्गो तथा सेन्ट साइमन से असहमत होते हुए समाजवाद को सामाजिक पुनर्निर्माण का आधार नहीं माना बल्कि सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए नैतिक शिक्षा, आध्यात्मिक शक्ति तथा समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण को आवश्यक माना। अनेक विद्वानों ने कॉम्ट की सामाजिक पुनर्निर्माण की योजना का विरोध भी किया लेकिन कॉम्ट ने इसी के आधार पर सामाजिक प्रगति की सम्भावना पर जोर दिया।

(8) मानवता के धर्म का सन्देश (Message of the Religion of Humanity)—समाजशास्त्र के लिए कॉम्ट के योगदान की विविधता इस तथ्य से भी स्पष्ट हो जाती है कि सामाजिक घटनाओं के अध्ययन के लिए एक वैज्ञानिक पद्धति पर जोर देने के बाद भी उन्होंने मानवता के धर्म की अवधारणा का प्रतिपादन किया। कॉम्ट वह पहले समाजशास्त्री थे जिन्होंने इस अवधारणा के द्वारा विज्ञान और धर्म के बीच समन्वय करने का सराहनीय प्रयत्न किया। एक वैज्ञानिक होने के बाद भी कॉम्ट ने यह स्पष्ट किया कि मानवता का अन्तिम उद्देश्य नैतिक मूल्यों को विकसित करना है। नैतिक मूल्यों के विकास से ही व्यक्ति का अहम् दूसरों के लिए समर्पण और सेवा के अधीन हो जाता है। वास्तव में, यही सामाजिक प्रगति तथा सामाजिक पुनर्निर्माण का सच्चा आधार है।

(9) सामाजिक प्रकृति का अध्ययन (Study of Social Nature)—कॉम्ट ने अपनी पुस्तक 'पॉजिटिव पॉलिटी' (Positive Polity) के दूसरे खण्ड में अनेक सिद्धान्तों की सहायता से सामाजिक

Scanned with CamScanner